SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

वैदिक यज्ञ संस्कार

विवेक मिश्रा, शोध छात्र, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज लखनऊ विश्वविद्यालय

यज्ञ मे द्रव्य विधिवत अग्नि मे होमकर उसे सूक्ष्म रूप से परिणित किया जाता है। अग्नि मे डाली हुई वस्तु का स्थलांश भस्म रूप पृथ्वी पर रह जाता है। स्थूल सूक्ष्म उभय-मिश्रित भाग धूम्र बनकर अंतरिक्ष में व्याप्त हो जाता है, जो अंततोगत्वा मेघरूप में परिणत होकर धूलोकस्थ देवगण को परितृत्त करता है। स्थल-सूक्ष्मवाद सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक अंशी तक पहुंचकर ही रहता है। जल कही भी हो, उसका प्रवाह आखिरकार अपने उद्गमस्थल समुद्र में पहुंचे बिना दम नही लेता।

यह वैज्ञानिक सूत्र स्वतः ही प्रमाणित करता है कि अग्नि में फूंके गए पदार्थ की सत्ता समाप्त नही होती। मनुस्मृति, अध्याय 3/76 भी एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग् आदित्यं उपतिष्ठते

अग्नि मे विधिवत डाली हुई आहुति, सूर्य मे उपस्थापित होती है। श्रीमद्भगवदुगीता, अध्याय 3, श्लोक 14-15 में भगवान श्रीकृष्ण सृष्टि-चक व यज्ञ के बारे मे कहते है-

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥

कर्म ब्रम्होद्रवं विद्धि ब्रम्हाक्षरसमुद्रवम । तस्मातसर्वगतं ब्रम्हा नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥

संसार के सम्पूर्ण प्राणी अन्न (खाद्य पदार्थ) से उत्पन्न होते है। अग्नि की उत्पत्ति वृष्टि से होती है और वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ (वेद) विहित कार्यों से उत्पन्न होने वाला है। कर्म समुदाय को तो वेद से उत्पन्न जान इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है। (गीता-3) ॥ 14, 15 ॥

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

हवन और वैज्ञानिक शंका

यूरोपीय साइंस की नकल करके उसको बदनाम करने वाले कुछ देशी विद्वान् कहा करते है कि हवन से कारबन, अर्थात ऐसी वायु उत्पन्न होती है जो मनुष्य के लिए हानिकारक है। हम कहते है कि यज्ञों के जितने गुण है उनको देखते हूए हवन के धुएँ से उत्पन्न होनेवाली हानियाँ कुछ मूल्य नही रखतीं, विशेषकर ऐसे समय मे जब रेल के एजिंन, मिलों की चिमनियों और सिगरेट के धुएँ रात-दिन लोगो का स्वास्थ्य नष्ट कर रहे है, परन्तु फिर भी लोग कहते है कि हवन से वायु बिगडती है, इसलिए हम उचित समझते है कि यहाँ पर यह दिखलाने का यन्त्र करे कि कभी-कभी धुवाँ भी लाभदायक होता है और बिना धुएँ के भी वायु हानिकारक होती है। धुएँ के लाभ दिखलाते हुए फांस के विज्ञानवेता अध्यापक ट्रिलवर्ट कहते है कि जलती हुई शक्कर मे वायु शुद्ध करने की बहुत बडी शक्ति है। उन्होने इसके प्रयेग भी दिखलाये है। वे कहते है कि इससे, क्षय, चेचक, हैजा आदि फलो को (जिनमे शक्कर अधिक होती है) जलाकर देखा है। उनको ज्ञात हुआ है कि इनके धुएँ से टाइफाइड के रोगकीट 30 मिनट मे और दूसरे रोगो के कीट घण्टे दो घण्टे मे नष्ट हो जाते है।

मेड्रास के सेनेटरी कमिश्नर कर्नल किंग आइ०एम०एस० ने कॉलेज के विद्यार्थियो को उपदेश किया है कि घी और चावल मे केसर मिलाकर जलाने से रोगजन्तुओ का नाश हो जाता है।

फ्रांस का डाक्टर हैफकिन कहता है कि घी के जलाने से रोगकीट मर जाते है। इन प्रमाणो से पाया जाता है कि विचारपूर्वक स्थिर किये हुए रोगनाशक पदार्थों के धुएँ से लाभ ही होता है, परन्तु यह न समझना चाहिए कि वायु से केवल कारबन निकाल डालने पर ही उसकी शुद्धि होती है। वायु मे बिना कारबन के भी बहुत से मारनेवाले तत्व उपस्थित हो जाते है। डॉक्टर जे० लैन नाटर एम०ए०, एम०डी०, आर०एच०, एफ०आर०सी०एस० ने हाइजिन नामी पुस्तक मे लिखा है कि जिन कोठरियो मे बहुत-से आदमी हो और खिडकियाँ खुली न हो वहाँ का वायु दोषयुक्त होता है। वहाँ कारबोनिक एसिड अधिक परिमाण मे होता है।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

वहाँ शिर घूमने लगता है और मूर्च्छा भी हो जाती है, परन्तु इसका कारण गर्मी या कारबन डाईआक्साइड की उत्पत्ति ही नही है, प्रत्युत वायु के अन्दर आक्सीजन का कम हो जाना है, क्योकि मनुष्य अथवा पशुओ के वे मलिन पदार्थ जो उनके श्वास और त्वचा से निकलते है, वायु मे भर जाते है और विष का काम करते है। इसका परीक्षण इस प्रकार किया गया है कि हवा से कारबन डाईआक्साइड निकाल लिया गया और मनुष्यो के श्वास से उत्पन्न हुआ वायु रहने दिया गया। उस वायु में जब चूहा रक्खा गया तो वह 45 मिनट में मर गया। इससे सिद्ध है कि मैली हवा कारबन डाईआक्साइड से भी अधिक जहरीली होती है कहने का तात्पर्य यह कि हवा केवल कारबन ही के निकाल देने पर शुद्ध नही हो सकती। उसमे से तो दूषित मलिनता के निकालने की आवश्यकता है हवन मे यह गुण है किवह दूषित मलिनता को जला देता है, परन्तु थोडा-सा कारबन रहने देता है, क्योकि हवन सो निकला हुआ कारबन वृक्षो का भोजन है। हवन से जहाँ वायु शुद्ध होती है वहाँ हवन से वृक्षो को भी भोजन मिलता है। हवनज ब सघन वृक्षावली (जंगल) मे होता है तब वहाँ की वायु शुछ हो जाती है और वनवृक्षो को भोजन भी मिल जाता है। इस प्रकार हवन सार्थक हो जाता है और उसमे कारबन फैलाने का दोष नहीं रहता, क्योकि हमने पिछले प्रकरणो मे बतलाया है कि यज्ञ की सामग्री घी दूध आदि पशुओ से और ओषधियों जंगलो से ही प्राप्त होती है। पशु भी जंगल मे ही चरते है, इसलिए यज्ञ का समस्त कार्य जंगल से ही चलता है। यज्ञ का ही काम नही चलता, प्रत्युत प्राणिमात्र का जीवन भी जंगल पर ही वनस्पति पर ही अवलम्बित है, इसलिए यज्ञ के मुख्य उद्देश्य मे वनस्पति को लाभ पहुँचाना भी है। वनस्पति को पानी और कारबन वायु की आवश्यकता होती है। वृक्ष कारबन वायु को खाते और वृष्टि के जल को पीते है। हम देखते है कि यज्ञ अपने धूम से कार्बन और वृष्टि की रचना एक ही साथ करते है और ये दोनो पदार्थ वृक्षो के खाने और पीने के काम आते है।

विज्ञान ने अब यह बात सिद्ध कर दी है कि वायु में जो डस्ट-धूल उडा करती है, वही आक्सीजन और हाईड्रोजन को मिलाकर पानी बनाने के लिए जामन का काम करती है। सभी को मालूम है कि यज्ञों का उद्देश्य पानी बरसाना भी है, अतः हवा का कार्बोनिक गैस जो वृक्षों के खाने से बच जाता है और 'डस्ट' के रुप मे रह जाता है उसे बरसात का पानी नीचे खींच लाता है और वह भी वृक्षों के लिए खाद बन जाता है। इस प्रकार कार्बन पानी बरसाने और वृक्षों का भोजन बनने में सहायता करता है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या यह कार्बनयुक्त वायु मनुष्यो के लिए हानिकारक है, हम कहते है कि नही। हमारा सिद्वान्त है कि यज्ञ का

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

स्थान जंगल होना चाहिए। यज्ञिको के लिए जंगल अनिवार्य वस्तु है। जंगल तुरन्त ही वायु के कारबन को खा जाता है और तुरन्त ही आक्सीजन वायु दे देता है, क्योंकि यह भी सिद्वान्त है कि वृक्ष कार्बोनिक गैस को खाते है और आक्सीजन, अर्थात प्राणपद वायु देते है। इस प्रकार वैदिक यज्ञदेश मे वैदिक यज्ञों द्वारा उत्पन्न वायु तत्क्षण उसी प्रकार लाभदायक हो जाती है, जिस प्रकार हमारे श्वासप्रश्वास। हमारे श्वासप्रश्वास प्राणपद वायु लेते है, इसलिए यज्ञों पर कार्बन फैलाने का अभियोग नही लग सकता। पूर्वोक्त समस्त विवरण के द्वारा यहा तक कर्मयज्ञों का वर्णन करके देखा तो ज्ञात हुआ कि वे हर प्रकार से विज्ञानयुक्त और आदिज्ञान के अनुरुप है।

यज्ञ या हवन सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान नही है इसके पीछे उर्जा और पर्यावरण विज्ञान भी कारण है। वेदो से लेकर पूजन पद्धतियों तक में हर जगह यज्ञ हवन का महत्व बताया गया है। यज्ञ सनातन संस्कृति का हिस्सा माना गया है, लेकिन यह सिर्फ एक धार्मिक कार्य नही है यज्ञ एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। इसमे जिन पेड़ो की समिधाएं उपयोग में लायी जाती है उसमे एक विशेष गुण होते है। किस प्रयोग के लिए किस प्रकार की सामग्री डाली जाती है इसका भी विज्ञान है, उन वस्तुओ के सममश्रण से एक विशेष गुण तैयार होता है जो जलने पर वायुमण्डल मे विशिष्ट प्रभाव पैदा करता है। वेद मंत्रो के उच्चारण की शक्ति से उस प्रभाव में और अधिक वृद्धि होती है।

जो व्यक्ति उस यज्ञ में शामिल होते है उन पर तथा निकटवर्ती वायुमण्डल पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक अभी तक कृत्रिम वर्षा कराने में सफल नही हुए है किन्तु यज्ञ के द्वारा वर्षा के प्रयोग बहुदा सफल होते है। व्यापक सुख-समृद्धि, वर्षा, आरोग्य, शान्ति के लिए बड़े यज्ञों की आवश्यकता होती है लेकिल छोटे यज्ञ हवन भी अपनी सीमा मर्यादा के भीतर हमे लाभान्वित करते है। यज्ञ में औषधि वाले पेड़ जैसे आम की लकड़ी, जौ, तिल, गाय के दूध से बना घी, करीब 55 तरह से अलग-अलग लकडियों से हवन की परम्परा है। यह औषधिया वातावरण मे सकारात्मक उर्जा का निर्माण करती है साथ ही कई तरह की बीमारी फैलाने वाले बैक्टीरिया को खत्म करते है और प्रकृति को संतुलित करते है और वातावरण को दूषित होने से बचाते है।

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते है,

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टा पुरोवाच प्रजापतिः ।

अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोअस्त्विष्टकामधुक् ॥

प्रजापति ब्रम्हाने कल्पके आदि मे यज्ञसहित प्रजाओं को रचकर उनसे कहा कि तुमलोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगो को इच्छित भोग प्रदान करने वाला हो। (गीता-3) ॥ 10 ॥

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा देवाताओ को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगो को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे। (गीता-3) ॥ 11 ॥

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः ।

तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥

यज्ञ के द्वारा बढ़ाये हुए देवता तुम लोगो को बिना मॉगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। इस प्रकार उन देवताओं के द्वारा दिए हुए भोगो को जो पुरुष उनको बिना दिये स्वयं भोगता है, वह चोर ही है। (गीता-3) 1| 12||

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकल्बिषैः । भुन्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापो से मुक्त हो जाते है और जो पापी लोग अपना शरीर-पोषण करने के लिये ही अन्न पकाते है, वे तो पाप को ही खाते है। (गीता-3) ॥ 13 ॥

संदर्भ

1. ऋग्वेद संहिता — विशेषतः मंडल 1, 9, 10 में यज्ञ, अग्नि, हवि, सोम यज्ञ आदि के मंत्रों का विस्तार।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

2. यजुर्वेद संहिता — विशेष रूप से शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता) और कृष्ण यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता) में यज्ञीय विधि का विस्तृत वर्णन।

3. सामवेद संहिता — यज्ञ में प्रयुक्त स्तोत्रों का संकलन।

4. अथर्ववेद संहिता — यज्ञ के सामाजिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय प्रभावों का उल्लेख।

5. शतपथ ब्राह्मण — यज्ञ की तात्त्विक व्याख्या; अग्निहोत्र, सामिधेन्य, राजसूय, अश्वमेध यज्ञ की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन।

6. तैत्तिरीय ब्राह्मण — कर्मकाण्डीय यज्ञ-विधि के शास्त्रीय सूत्र।

7. ऐतरेय ब्राह्मण — देवताओं और यज्ञ के दार्शनिक पक्ष का विवेचन।

8. गृह्यसूत्र एवं श्रौतसूत्र — जैसे आपस्तंब गृह्यसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र, शांकायन श्रौतसूत्र इत्यादि में यज्ञ के गृहस्थीय एवं श्रौत रूपों का विधान।

9. मनुस्मृति (अध्याय 3, श्लोक 67–82) — गृहस्थ के नित्य कर्मों में यज्ञ का उल्लेख।

10. भागवत पुराण (स्कंध 11, अध्याय 5) — यज्ञ के आध्यात्मिक स्वरूप पर विवेचन।

11. भगवद्गीता

© Shodh Patra